अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासनिक एवं सैनिक सुधार

अलाउद्दीन खिलजी तुर्क अफगान काल का एक महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध शासक था। अपने चाचा एवं श्वसुर जलालुद्दीन की हत्या करने के बाद वह दिल्ली की गद्दी पर बैठा था वह कट्टर सुन्नी मुसलमान था तथा उसे अपने धर्म में पूर्ण आस्था थी। उसकी धार्मिक नीति को अनुदार एवं असहिष्णु थी। उसने अपने शासन काल में हिन्दू अमीरों, अधिकारियों तथा साधारण प्रजा को कठोरता पूर्वक दमन किया। उन्हें आर्थिक रूप से इतना खोखला कर दिया कि वे विद्रोह की बात सोच भी नहीं सकते थे

वह एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था प्रारंभिक सफलताओं से फूलकर वह नवीन धर्म की स्थापना तथा सिकन्दर की भाँति विश्व विजय का सपना देखने लगा परन्तु बाद में काजी अला-उल मुल्क की सलाह पर उसने नवीन धर्म का विचार त्याग दिया और अपने विश्व विजय की इच्छा को भारत विजय एवं भारत में शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित करने में बदल दिया।

अलाउद्दीन अपने विशाल साम्राज्य के संचालन में योग्यता एवं कुशलता का परिचय दिया। उसने शासन सुधारों में कुशल राजनीतिज्ञ एवं आदर्श अर्थशास्त्री के गुणों के दर्शन होते हैं उसने तीन लक्ष्य निर्धारित किये ~~आन्तरिक~~ आन्तरिक शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित करना, विदेशी आक्रमणों से सल्तनत को सुरक्षित रखना तथा साम्राज्य विस्तार करना

अलाउद्दीन ने प्रथम अल्पादेश के द्वारा दान, उपहार, और पेन्शन के रूप में दी गई भूमि को जब्त किया इस अल्पादेश का यह परिणाम निकला कि अब अमीर, उच्च

Monday 26 फाल्गुन सुदी ११-२०७४ FEB 18 Tuesday 27 फाल्गुन सुदी १२-२०७४
REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

DANGUN

को छोड़कर किसी अन्य पदाधिकारी और व्यापारी व्यक्ति के घर में सोना नहीं रह पाया।

दूसरा अध्यादेश द्वारा गुप्तचर विभाग को पुनः संगठित किया गया, गुप्तचरों की नियुक्ति की गई के प्रत्येक क्षेत्र में तथा के घर, कार्यालय, हाट-बाजार सभी स्थानों में आ जा सकते थे। गुप्तचरों का आतंक इतना अधिक हो गया कि कोई भी अमीर अपने घर में भी सुल्तान के विरोध में खुलकर कोई बात नहीं कर पाते।

तीसरे अध्यादेश द्वारा मादक द्रव, मदिरापान, जुआ आदि पर प्रतिबन्ध लगा दिया सुल्तान ने स्वयं शराब का त्याग किया

चौथा अध्यादेश द्वारा अमीरों एवं सरदारों के बीच सामाजिक मेल जोल एवं वैवाहिक सम्बन्धों पर प्रतिबन्ध लगा दिया और करों का बोझ लादकर निर्बल कर दिया इस प्रकार कोई हिन्दू के विद्रोह के लिए सोच भी न सके।

न्याय सम्बन्धी सुधार → एक योग्य प्रशासक होने के नाते अलाउद्दीन ने न्याय विभाग में महत्वपूर्ण सुधार किया। इसने न्याय-सम्बन्धी नियमों को धर्म के संकीर्ण क्षेत्र से बाहर लाकर लौकिक प्रदान किया। इसने लोककल्याणकारी न्याय पद्धति को जन्म दिया न्यायाधीशों की संख्या में वृद्धि कर उनकी सच्चरित्रता, निपुणता, विद्वता एवं कार्यकुशलता

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

अफसरों के द्वारा भूमि की नपवाना एवं उपज का 50% लगान के रूप में वसूल किया सरकारी लगान कनकूट बटाई के रूप में वसूल की जाती थी इसके अलावा किसानों को गृह कर, चारागाह कर, जातक एवं हिन्दुओं से जजिया कर लिया जाता था। उसने राजस्व विभाग में छोटे-बड़े अफसरों को नियुक्त कर अच्छा वेतन देता था ताकि रिश्वत के लालच में न पड़े उसने पुराने हिन्दू अधिकारी जैसे खूंट, पटवारी, मुकद्दम आदि का विशेषाधिकार छीन कर वेतन देना प्रारम्भ किया

05 Monday
चैत्र बदी 4-2074

MAR '18

बाजार नीति → अलाउद्दीन ने एक विशाल सेना रखी थी इस सेना के संचालन के लिए अधिक वेतन देना असंभव था उसने प्रतिदिन व्यवहार की जाने वाली वस्तुओं को सस्ता कर इस समस्या का समाधान निकाला उसने वस्तुओं के भाव पर नियंत्रण स्थापित किया। खाने-पीने की आवश्यक वस्तुओं का मूल्य निर्धारण किया (1 जीतल = 1.5 पैसा, 1 टंका = 1 रुपया) जैसे 1.5 मन गेहूँ डेढ़ जीतल, 1 मन चावल पाँच जीतल, 1 मन नमक दो जीतल, अतः निश्चित मूल्य से अधिक लेने वाले को दण्ड दिया जाता था दिल्ली के आस-पास किसी भी व्यक्ति को 10 मन से अधिक अनाज रखने की अनुमति नहीं थी। कम वजन तौलने वाला को शरीर से उतना मांस काट लिया जाता था। कालाबाजारियों के लिए कठोर दण्ड विधान था।

06 Tuesday
चैत्र बदी 5-2074

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

पर विशेष ध्यान दिया उसने अपराधों के सही
अन्वेषण के लिए योग्य पुलिस एवं गुप्तचरों की नियुक्ति
की दण्ड व्यवस्था अत्यंत कठोर थी अंग-भंग का
दण्ड साधारण सी बात थी।

डाक पद्धति → अलाउद्दीन ने साम्राज्य के विभिन्न भागों
से निरंतर सम्पर्क स्थापित करने तथा डाक प्राप्त करने
के लिए समुचित डाक की व्यवस्था की थी।

सैन्य सुधार → अलाउद्दीन का राज्य एक प्रकार से
तानाशाही था। मंगोलों के आक्रमण, मुसलमों के
विद्रोह को रोकने तथा अपनी विजयों को बढ़ाने के लिए
अलाउद्दीन ने विशाल, सुसंगठित एवं व्यवस्थित सेना की स्थापना
की इसके लिए उसने बलबन की नीति अपनाई उसने पुराने
किलों तथा पश्चिमी सीमा तरफ जाने वाले मार्गों पर अनेक
दुर्ग बनवाये तथा विश्वास पात्र सेनापति के अधीन सेना की
टुकड़ी रखी। अलाउद्दीन की सेना में 475000 घुड़सवार थे
सैनिकों को नकद वेतन देता था सैनिकों के तीन
वर्ग थे प्रथम श्रेणी के सैनिकों को 238 टंके द्वितीय श्रेणी
के सैनिकों को 156 टंके तथा तृतीय श्रेणी के सैनिकों
को 78 टंके वेतन थे हर सैनिक का हुलिया लिखा
जाता था सेना के प्रत्येक टुकड़ी में गुप्तचर रखा
किया था सेना में धोखाधड़ी रोकने के लिए सैन
घोड़ों को दागने की प्रथा प्रारम्भ की
के लिए उपयुक्त अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित किया

आर्थिक सुधार → अलाउद्दीन ने भूमि सम्बन्धी
आवश्यक सुधार किये उसने योग्य

BANGUR
REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

BANGUR

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि अलाउद्दीन एक वीर सैनिक और महान सेनानायक था। महत्वाकांक्षी, साम्राज्यवादी तथा कुशल प्रशासक था। वह धर्मपरायण किन्तु अनुदार एवं असहिष्णु शासक था। निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी होते हुए भी वह साहित्य तथा कला कौशल का पोषक था।